जूनियर चैंबर इंटरनेशनल (जेसीआई) इंडिया के राष्ट्रीय सम्मेलन में माननीय अध्यक्ष का सम्बोधन

यह जेसीआई इंडिया की 67वीं नेशनल कांफ्रेंस है। इस संस्था का गठन वर्ष 1915 में हुआ। इसके अंतर्गत देश के नौजवानों को विकास के अवसर मिले, उनके प्रयासों से सकारात्मक परिर्वतन आए, इसके लिए विश्व के 115 देशों के अंदर यह संगठन संचालित है। जिस देश में भी जेसीआई के प्रतिनिधि हैं, कार्यकर्ता हैं, वहां इसी तरीके से वे अपने-अपने राष्ट्र के नवनिर्माण के लिए, नौजवानों के विकास के लिए और उनके जीवन में सकारात्मक परिवर्तन करने के लिए लगातार एक लंबे समय से प्रयास कर रहे हैं। इसीलिए इस संगठन ने अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर अपने कार्यों से, अपने विजन से, अपने समर्पण से, अपनी सेवा और निष्ठा से एक प्रतिष्ठा प्राप्त की है।

मुझे खुशी है कि भारत में भी इस संगठन को 73 वर्ष हो चुके हैं, जो कि एक लंबी यात्रा है। अभी हमने 75 वर्षों की लोकतंत्र की यात्रा पूरी की है। आपने 73 वर्षों की यात्रा पूरी की है। मुझे आशा है कि जब आप 75 वर्षों की लोकतंत्र की इस यात्रा के साथ-साथ जेसीआई की 75 वर्षों की यात्रा करेंगे और अपने लोकतांत्रिक तरीके से चर्चा, संवाद, बातचीत, अनुभवों और विचारों को साझा करेंगे तो उससे आपको बहुत कुछ अनुभव होगा और आप उन अनुभवों पर विचार करके नए निष्कर्ष तथा नई दिशा की ओर अपनी कार्य योजना बनाएंगे। अगले 100 सालों के अन्दर, जिसके पूरा होने में 25 साल बचे हैं तथा जब आपका शताब्दी वर्ष होगा, उस समय के लिए हम किस लक्ष्य से काम करें और उस लक्ष्य को प्राप्त करे, वह निश्चित रूप से आपके लिए चुनौतीपूर्ण होगा। लेकिन आपका जो संकल्प और चिंतन है, इस चिंतन और संकल्प से 100 सालों की यात्रा के अंदर जेसीआई इंटरनेशनल देश के युवाओं का विकास, उनके सकारात्मक परिवर्तन तथा राष्ट्र निर्माण के लिए एक महत्वपूर्ण योगदान देगा। पूरे देश में जेसीआई के 60 हजार से ज्यादा सदस्य हैं।

अभी भारत के लोकतंत्र की 75 वर्षों की यात्रा के साथ-साथ जी-20 का सम्मेलन भी भारत में आयोजित हो रहा है। यह जी-20 का सम्मेलन पूरे विश्व के अंदर एक दिशा देगा, नया दृष्टिकोण देगा। जी-20 का सम्मेलन पूरे विश्व के अंदर नए बदलाव की ओर ले जाने वाला होगा। आप सब जानते हैं कि जी-20 उन देशों का एक महत्वपूर्ण संगठन है जहां विश्व की आाबादी का 75 प्रतिशत से अधिक भाग रहता है और जिसकी विश्व व्यापार में बड़ी हिस्सेदारी है। यह संगठन निश्चित रूप से वैश्विक चुनौतियों के समाधान और सारा विश्व एक है, इस दिशा की ओर काम करेगा। इसलिए हमारी संस्कृति, हमारी परंपराओं में वसुधैव कुटुम्बकम का विचार है कि सारा विश्व हमारा परिवार है। विश्व में किसी एक देश के अंदर कोई चुनौती आती है, आपदा आती है, या आर्थिक सामाजिक ढांचे में बदलाव आता है तो उस सारे तंत्र से पूरा विश्व प्रभावित होता है। आप वर्तमान समय में दो देशों के विवाद से ही पूरे वैश्विक तंत्र के अंदर आर्थिक और सामाजिक तंत्र में परिवर्तन का विषय देख रहे हैं। इसलिए हम सबके सामने यह बहुत महत्वपूर्ण अवसर है कि हम विश्व का नेतृत्व कर सकें और पूरे विश्व को एक दिशा दे सकें। जैसा कि हमने कहा है कि हम सबको साथ लेकर एक परिवार के रूप में चलें, आर्थिक और सामाजिक रूप से सभी देश आर्थिक तथा सामाजिक प्रगति करें एवं एक-दूसरे देशों के अंदर सहयोग की भावना हो, इस दिशा के लिए यह जी-20 का सम्मेलन निश्चित रूप से महत्वपूर्ण साबित होगा।

इसी के साथ आपका संगठन भी वैश्विक चुनौतियों पर समाधान का रास्ता ढूंढता है। आप पूरे विश्व के नौजवानों को एक सक्रिय नागरिक बनाने के लिए हैं, ताकि वे वैश्विक चुनौतियों का समाधान कर सकें। किस तरीके की चुनौतियां भारत में होंगी, विश्व में होंगी और उनका स्थाई समाधान क्या होगा, इसके लिए आपका संगठन निश्चित रूप से विचार करेगा, अपने-अपने अनुभवों को साझा करेगा। कोई भी आपदा हो, संकट हो, गांव के विकास की बात हो, नौजवानों के अंदर सकारात्मक परिवर्तन के लिए उनके व्यापार और इंडस्ट्री सेक्टर के अंदर नेतृत्व देने का काम हो, गांव के अंदर सामाजिक-

आर्थिक परिवर्तन करना हो, संपूर्ण विश्व के अंदर जेसीआई संगठन ने आपदा और संकट के अंदर काम किया है।

हम इस वैश्विक परिवर्तन में भारत में एक नए दौर की ओर देख रहे हैं। लोकतंत्र की हमारी एक लंबी यात्रा रही है। इस लोकतंत्र की लंबी यात्रा में हमने इन 75 वर्षों में बहुत सामाजिक और आर्थिक परिवर्तन किए हैं। जब वर्ष 1947 में देश आजाद हुआ था तो हमारा बजट 175 करोड़ रुपए था। उस समय हमने यात्रा शुरू की थी। आज हमारा बजट 40 लाख करोड़ रुपए का है। हमारा विविधताओं वाला देश है, विशालता वाला देश है, अलग-अलग संस्कृति, अलग-अलग भाषा, अलग-अलग बोलचाल वाला देश है। जब देश आजाद हुआ था तो दुनिया ने सोचा था कि इतने बड़े देश में इतनी विशालता, विविधता, अलग-अलग संस्कृति, अलग-अलग धर्म हैं तो शायद यह देश एक साथ कभी संगठित होकर नहीं रह पाएगा। जब आप पार्लियामेंट की, संविधान की उस समय की डिबेट का हिस्सा देखेंगे तो आपको लगेगा कि उस समय किस तरीके की चुनौतियां थीं। हमारी साक्षरता दर 20% थी। हम हेल्थ के इंडेक्स और सभी इंडेक्स के अंदर दुनिया से बहुत पीछे थे।

हमारे यहां लोकतंत्र की शासन पद्धति है, जो हमारे संविधान में बनाई गई। हम कहते हैं कि हमारा प्राचीनतम लोकतंत्र है। लोकतंत्र हमारे जीवन का हिस्सा है, हमारी परंपरा का हिस्सा है, हमारे कार्य का हिस्सा है। यह लोकतंत्र कोई आजादी के बाद नहीं मिला है। इसलिए इस जी-20 के अंदर भी हम दुनिया को यह बताने वाले हैं कि भारत सबसे प्राचीनतम लोकतंत्र है और हम लोकतंत्र की शासन पद्धति पर सबसे ज्यादा विश्वास रखते हैं। आज दुनिया के कितने ही देशों में चले जाइए, जहां लोकतंत्र नहीं होगा, वहां भी ऐसी शासन पद्धति को दिखाते हैं, जैसे वहां पर बड़ा लोकतंत्र हो। मैं कई देशों के अंदर जाता हूं और जब हमारी वर्ल्ड कॉन्फ्रेंस ऑफ स्पीकर्स होती है तो मैं देखता हूं कि दुनिया के अंदर कहीं पर एक दल की शासन पद्धति है, कहीं लोकतंत्र नहीं है, लेकिन वे लोकतंत्र की बड़ी चर्चा करते हैं, बड़ी विवेचना करते हैं, क्योंकि दुनिया ने माना है कि लोकतंत्र ही शासन चलाने की सर्वश्रेष्ठ

पद्धति है। हमारे यहां संविधान के अंदर जनता को बीच में रखकर, जनता की सरकार द्वारा संचालित शासन है। यह हमारी ताकत है। दुनिया के बड़े-बड़े विकसित देशों ने जब महिलाओं को वोट का अधिकार नहीं दिया था, तब भारत के संविधान के अंदर समानता, सबको मौलिक अधिकार, सबको न्याय का अधिकार था, ऐसा हमारा संविधान है। यह संविधान की ताकत ही है कि हमारे लोकतंत्र में अभिव्यक्ति है, आजादी है और हम हर कार्य व्यवहार को इस लोकतंत्र के कारण बेहतरीन कर सकते हैं।

इस विषय पर आपकी बड़ी जिम्मेदारी है। बदलती हुई परिस्थिति में हमारे देश के नौजवानों ने दुनिया को यह बता दिया है कि हर चुनौती का समाधान निकालने की सामर्थ्य और शक्ति भारत के नौजवानों में है। आप यह देखिए कि वर्ष 2014 में स्टार्ट-अप्स गिनती के थे, लेकिन आज लाखों स्टार्ट-अप्स हैं। दुनिया में जो कुछ भी नया रिसर्च, नया इनोवेशन होता है, उसमें हमारी पद्धति और कार्यशैली का बड़ा योगदान है। हमने सबसे सस्ता-टिकाऊ इनोवेशंस करके दुनिया को दिशा देने का काम किया है। अभी दुनिया में कोविड वैक्सीन्स की बात चल रही है। भारत ने अपना वैक्सीन बनाया। लोग कहा करते थे कि भारत हमेशा मेडिकल रिसर्च के लिए विकसित राष्ट्रों की ही ओर देखता था। आजादी के बाद भारत ने कभी ऐसी वैक्सीन नहीं बनाई, जिसको दुनिया मानें। हमारे वैज्ञानिकों में इतनी ताकत है कि उन्होंने वह वैक्सीन बनाई, जिसको आज दुनिया मान्यता देती है।

आप सामाजिक क्षेत्र में काम कर रहे हैं, आर्थिक क्षेत्र में भी लोगों के जीवन में परिवर्तन लाने के लिए काम कर रहे हैं। आप एक अच्छा युवा नेतृत्व देना चाहते हैं। केवल राजनीति के अंदर ही नेतृत्व नहीं होता है, बल्कि हर कार्य में लीडरशीप होता है। चाहे वे बिजनेस, व्यापार, कंपनी में हों या मशीन चलाने वाले हों, नेतृत्व का गुण व्यक्ति के अंदर होता है। अगर उनकी नेतृत्व क्षमता सामूहिकता के साथ लेकर चलने की होगी, सभी के मतों को लेकर चलने की होगी, तो हम बेहतर नेतृत्व देकर बेहतर परिणाम दे सकते हैं। इसलिए मेरी आपसे अपेक्षा है कि हमें कुछ एजेंडा तय करना चाहिए। भारत में जो मौजूदा चुनौतियां हैं, उनमें से एक-दो चुनौतियों को निकालने का काम जेसीआई करे। जेसीआई दुनिया

को बताए कि भारत में जेसीआई के नौजवानों ने इन चुनौतियों का समाधान निकाल कर लोगों के सामाजिक-आर्थिक जीवन में परिवर्तन लाने का काम किया है। क्योंकि हम में वह सामर्थ्य, शक्ति, नई सोच, विचार एवं नई चिंतन की शक्ति, बौद्धिक क्षमता और टेक्नोलॉजी हैं। हम इनमें लगातार आगे बढ़ रहे हैं। एक समय आएगा, जब दुनिया के विकसित राष्ट्रों से हमारी टेक्नोलॉजी बेहतर होगी। क्योंकि हमारे नौजवानों की बौद्धिक क्षमता, ऊर्जा, सामर्थ्य और देशों के नौजवानों से ज्यादा है। इसलिए हमारा भरोसा है कि नौजवानों के बल पर हम दुनिया में हर चुनौतियों का समाधन करेंगे। इसलिए आपके सामने चुनौती है कि आप कैसे नौजवानों को तैयार करेंगे? हम गांव के आर्थिक तंत्र में क्या बदलाव ला सकते हैं? हम लोगों के सामाजिक जीवन में क्या बदलाव ला सकते हैं? हमारा दृष्टिकोण इस दिशा की ओर काम करेगा। हम एक-दो एजेंडा को पकड़ कर काम करना शुरू कर देंगे, तो शायद हम भारत में बहुत बड़ा परिवर्तन ला पाएंगे।

मैं जेसीआई से जुड़ा रहता हूं। मैं देखता हूं कि किस तरह का जेसीआई के लोगों का समर्पण, भाव और संस्कार है। वे अपना धन कमाते हैं और समाज को समर्पित करते हैं और लीडरशीप देने का काम करते हैं। राष्ट्र के प्रति समर्पण का भाव है। उनका एक अच्छा दृष्टिकोण है। इसीलिए मेरा आपसे आग्रह है कि हमें इस माहौल की ओर बढ़ना चाहिए, सकारात्मक दिशा की ओर बढ़ना चाहिए। आपने कई मुद्दों पर चर्चा की है। आपने हमेशा एसडीजी के मुद्दों पर बात की है। आपने इसकी चर्चा इंटरनेशनल कॉंफ्रेंसों में चर्चा की है कि एसडीजी के अंदर कैसे भारत के मानकों को सबसे ऊपर ला सकें। इस दृष्टिकोण से आपने काम किया है। ऐसे कई सारे दृष्टिकोण हैं, जिन पर आपकी तीन दिनों की कॉंफ्रेंस, चर्चा, संवाद, सहमति-असहमति और उसके बाद निर्णय, निर्णय के मंथन से जो अमृत निकलेगा, उसी से समाज का कल्याण करने का लक्ष्य आपके इस कॉंफ्रेंस से तय होगा।

मुझे आशा है कि आप सभी सामर्थ्यवान नौजवान इस दिशा की ओर काम करेंगे। तीन दिनों के कॉंफ्रेंस में आपके सिद्धांत, नैतिकता और आदर्श के साथ अनुशासनपूर्ण जिंदगी जीते हुए किस तरीके से भारत के नौजवानों में सकारात्मक बदलाव ला सकते हैं, उस लक्ष्य को आप पूरा कर पाएंगे।

आपको इस कॉंफ्रेंस की बहुत-बहुत शुभकामनाएं, बहुत-बहुत बधाई।